بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ

لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ

دفتر مجلس انصاراللہ بھارت

Office Of The Majlis Ansarullah Bharat

Mohallah Ahmadiyya Qadian-143516, Distt.Gurdaspur (Punjab) INDIA

Mob.9682536974,E-Mail :ansarullah@qadian.in Khulasa Khutba-04.02.2022 محلہ احمدیہ قادیان ۱۴۳۵۱۶ ضلع: گورداسپور (پنجاب)

रसूल-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया हज़रत अबू बकर रज़ी. का उदाहरण फ़रिश्तों में से मीकाईल और नबियों में से हज़रत इबराहीम अलैहिस्सलाम का सा है।

आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के महान स्तरीय ख़लीफ़-ए-राशिद हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ीयल्लाहु तआला अन्हु के सद्गुण तथा कीर्तिमान विशेषताएँ।

सारांश ख़ुत्बः जुम्अः सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, बयान फ़र्मूदा 04 फ़रवरी 2022, स्थान मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद, टिलफ़ोर्ड यू.के.

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ

امّا بعد فاعوذ باللہ من الشیطٰن الرجیم۔ بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعَالَمِیۡنَ ۔ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ۔ مٰلِکِ یَوۡمِ الدِّیۡنِ ۔ اِیَّاکَ نَعۡبُدُ وَ اِیَّاکَ نَسۡتَعِیۡنُ ۔ اِہۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِیۡمَ ۔ صِرَاطَ الَّذِیۡنَ اَنۡعَمۡتَ عَلَیۡہِمۡ غَیۡرِ الۡمَغۡضُوۡبِ عَلَیۡہِمۡ وَلَا الضَّآلِّیۡنَ۔

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया- आजकल हज़रत अबू बकर रज़ीयल्लाहु तआला अन्हु का वर्णन हो रहा है, कुछ युद्धों का भी वर्णन हुआ था। अब्दुर्रहमान बिन ग़नीम रज़ी. रिवायत करते हैं कि जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम बनू क़ुरैज़ा की ओर रवाना हुए तो हज़रत अबू बकर रज़ी. और हज़रत उमर रज़ी. ने आप स. की सेवा में निवेदन किया कि लोग यदि आप स. को सांसारिक वैभव वाले लिबास में देखेंगे तो उनमें इस्लाम क़बूल करने की इच्छा अधिक बढ़ेगी। आप स. ने फ़रमाया- मेरे रब ने मेरे लिए उमर बिन ख़त्ताब रज़ी. का उदाहरण फ़रिश्तों में से जिब्रईल का सा बयान किया है। अल्लाह ने हर एक उम्मत को जिब्रईल के द्वारा ही नष्ट किया है तथा उनका उदाहरण नबियों में से हज़रत नूह अलै. का सा है, जब उन्होंने कहा- لَا تَذَرْ عَلَى الْأَرْضِ مِنَ الْكٰفِرِيْنَ دَيَّارًا ऐ मेरे रब! काफ़िरों में से किसी को धरती पर बसता हुआ न रहने दे और अबू बकर रज़ी का उदाहरण मीकाईल की भांति है। जब वह क्षमा चाहता है तो उन लोगों के लिए जो ज़मीन में हैं तथा नबियों में उनका उदाहरण हज़रत इब्राहीम अलै. की भांति है जब उन्होंने कहा- فمن تبعنی فانه منی ومن عصانی فانك غفور رحیم अतः जिसने मेरा अनुसरण किया तो निःसन्देह वह मुझसे है तथा जिसने मेरे आज्ञा पालन न किया तो निःसन्देह तू अति क्षमा शील तथा बार बार दया करने वाला है। आप स. ने फ़रमाया- यदि तुम दोनों मेरे लिए किसी एक बात पर सहमत हो जाओ तो मैं तुमहारे सुझाव के विरुद्ध नहीं करूंगा किन्तु तुम दोनों की

स्थिति सुझाव में कई प्रकार से है, जैसे जिब्रईल और मीकाईल और नूह और इब्राहीम अलैहिस्सलाम का उदाहरण है।

एक रिवायत है कि बनू क़ुरैज़ा में हज़रत सअद रज़ी. और हज़र कअब रज़ी. बिन उमर वमाज़नी भी तीर चलाने वालों में से थे जिन्होंने अत्यधिक तीर चलाए थे। जब रात का कुछ भाग बीत गया तो ये अपने अपने ठिकानों की ओर लौट आए तथा हज़रत सअद बिन अबादा रज़ी. की भेजी हुई खजूरें खा कर समय व्यतीत किया। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हज़रत अबू बकर रज़ी. और हज़र उमर रज़ी. भी खजूरें खा रहे थे। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं कि खजूर क्या ही उत्तम खाना है। हज़रत आयशा रज़ी. बयान फ़रमाती हैं कि जब हज़रत सअद बिन मआज़ रज़ी. की मृत्यु के समय की अवस्था हुई थी तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और हज़रत अबू बकर रज़ी. और हज़रत उमर रज़ी. उनके पास तशरीफ़ लाए, फ़रमाती हैं कि उसकी क़सम जिसके हाथ में मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की जान है कि मैं हज़रत उमर रज़ी. के रोने की आवाज़ को हज़रत अबू बकर रज़ी. के रोने की आवाज़ से अलग पहचान रही थी जबकि मैं अपने हुजरे में थी, अर्थात ये दोनों उस समय रो रहे थे और वे ऐसे ही थे जैसे कि अल्लाह अज़्ज़ोजल ने फ़रमाया है-رُحَمَاءُبَيْنَهُمْ अर्थात आपस में एक दूसरे से अत्यधिक मुहब्बत करने वाले हैं।

हुदैबियः की सन्धि के बारे में पिछले ख़ुत्बों में वर्णन हो चुका है कि एक सपने के आधार पर आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम चौदह सौ सहाबियों के संग जुलक़अदा छः हिजरी में उमरा अदा करने के लिए रवाना हुए। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को पता चला कि मक्का के काफ़िरों ने आप स. को मक्का में दाख़िल होने से रोकाने की तय्यारी कर ली है। बुख़ारी के एक बयान में उल्लिखित है कि उस अवसर पर आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ क़ुरैश के समझौते की शर्तें तय हो चुकी थीं। उस समय सुहेल बिन उमरू के बेटे हज़रत अबू जन्दल रज़ी. अपनी ज़ंजीरों में लड़खड़ाते हुए आए। सुहेल बिन उमरू ने जो मक्का वालों की ओर से दूत थे उनको वापस करने के लिए मांग की। आँहुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उसे क़ुरैश को वापस कर दिया। हज़रत उमर रज़ी. से न रहा गया और रसूल करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से कहा- क्या आप स. सच्चे रसूल नहीं? आप स. ने फ़रमाया- हाँ अवश्य हूँ। हज़रत उमर रज़ी. ने कहा- क्या हम हक़ पर नहीं तथा हमारा शत्रु असत्य पर नहीं? आप स. ने फ़रमाया- हाँ अवश्य ऐसा ही है। हज़रत उमर रज़ी. ने कहा- तो फिर हम अपमान जनक शर्तें क्यूँ सहन करें? आप स. ने फ़रमाया- मैं ख़ुदा का रसूल हूँ तथा ख़ुदा की इच्छा को जानता हूँ और उसके विरुद्ध नहीं चल सकता और वही मेरी सहायता करने वाला है। हज़रत उमर रज़ी. ने कहा- क्या आप स. ने नहीं फ़रमाया था कि हम बैतुल्लाह का तवाफ़ (कअबे की परिक्रमा) करेंगे? आप स. ने फ़रमाया- क्या मैंने यह भी कहा था कि यह तवाफ़ अवश्य इसी वर्ष होगा? हज़रत उमर रज़ी. ने कहा- नहीं। आप स. ने फ़रमाया- फिर प्रतीक्षा करो, तुम इन्शाअल्लाह अवश्य मक्का में दाख़िल होकर कअबे का तवाफ़ करोगे। किन्तु हज़रत उमर रज़ी. की संतुष्टि नहीं हुई और हज़रत अबू बकर रज़ी. के पास जाकर उनसे भी इसी प्रकार की बातें कीं। हज़रत अबू बकर रज़ी. ने भी वही जवाब दिए परन्तु साथ ही फ़रमाया- देखो उमर, रसूले ख़ुदा की रकाब पर जो हाथ तुमने रखा है उसे ढीला न होने दो क्यूँकि ख़ुदा की क़सम यह व्यक्ति सच्चा है। हज़रत उमर रज़ी. कहते हैं कि बाद में मुझे बड़ी शर्म अनुभव हुई तथा मैंने

तौबा के रंग में इस कमज़ोरी के प्रभाव को दूर करने के लिए अत्यधिक नफ़्ली कर्म किए ताकि मेरी इस कमज़ोरी का धब्बा धुल जाए।

इसी हुदैबियः की सन्धि को विस्तार से बयान करते हुए हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब ने लिखा है कि उर्वा नामक व्यक्ति आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सेवा में आया और क़ुरैश के पक्ष में अधिक से अधिक शर्तें सुरक्षित कराने की भावना से कहने लगा, ऐ मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) !यदि क़ुरैश का ग़ल्बः हो गया तो ख़ुदा की क़सम मुझे आपके आस पास ऐसे मुंह दिखाई दे रहे हैं कि ये सब लोग आपका साथ छोड़ देंगे। हज़रत अबू बकर रज़ी. जो उस समय आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास ही बैठे थे, उर्वा के ये शब्द सुन कर क्रोध से भर गए तथा फ़रमाने लगे- जाओ जाओ तथा अपने बुत लात को चूमते फिरो, क्या हम रसूले ख़ुदा को छोड़ जाएँगे? अर्थात क्या ऐस हो सकता है कि तुम तो बुतों के लिए धैर्य और सुदृढ़ता दिखाओ और हम ख़ुदा पर ईमान लाते हुए रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को छोड़ कर भाग जाएँ!!!

सीरत ख़ातमुन्नबिय्यीन स. से उद्धृत है कि हुदैबियः की सन्धि से सम्बंधित प्रपत्र की दो प्रतियाँ तय्यार की गईं और साक्षी के रूप में मुसलमानों की ओर से हस्ताक्षर करने वालों में हज़रत अबू बकर रज़ी. भी शामिल थे। हज़रत अबू बकर रज़ी. फ़रमाया करते थे कि इस्लाम में हुदैबियः की सन्धि से बड़ी कोई सफलता नहीं है।

हज़रत अबू बकर रज़ी. की ओर से एक अभियान जो बनू फ़ज़ारा की ओर छः हिजरी में हुआ। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत अबू बकर रज़ी को इस अभियान का अमीर नियुक्त फ़रमाया था। हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ी. ने इस अभियान का वर्णन करते हुए बयान फ़रमाया कि इसमें मुशरिकों के कई लोग मारे गए तथा कई बन्दी बना लिए गए।

हज़रत अबू बकर रज़ी. की ओर से एक अभियान नजद की ओर- इसके बारे में लिखा है कि यह अभियान शअबान के महीने सात हिजरी में हुआ। हज़रत सलमा बिन अकूअ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मुहर्रम के महीने सात हिजरी में ख़ैबर की ओर गए। लाहौर से प्रकाशित एक पुस्तक सय्यदना सिद्दीक़ अकबर रज़ी. के लेखक ने लिखा है कि एक क़िला हज़रत अबू बकर रज़ी. के हाथ पर विजय हुआ जबकि दूसरा क़िला हज़रत उमर रज़ी. के हाथ पर और तीसरा क़िला क़मोस नामक पर हज़रत अली रज़ी. ने विजय पाई। ख़ैबर के युद्ध के पश्चात रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अन्य रिश्तेदारों के अतिरिक्त हज़रत अबू बकर रज़ी. को भी एक सौ वस्क़ (अनाज नापने का पैमाना) अनाज तथा खजूरें प्रदान किया।

क़ुरैश के दोस्त क़बीले बनू बकर ने हुदैबियः के समझौते की अवहेलना करते हुए मुसलमानों के दोस्त क़बीले बनू ख़ज़ाअः पर हमला किया और क़ुरैश ने हथ्यारों तथा सवारियों से बनू बकर की सहायता की और हुदैबियः के समझौते की शर्तों का पालन नहीं किया तो उस समय अबू सुफ़यान मदीना आया तथा हुदैबियः की सन्धि के प्रपत्र का नवीनीकरण चाहा। वह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास गया किन्तु आप स. ने उसकी किसी बात का जवाब नहीं दिया। फिर वह हज़रत अबू बकर रज़ी. तथा हज़रत उमर रज़ी. के पास गया और उनसे बात की, कि वे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बात करें परन्तु दोनों के इंकार के बाद वह असफल वापस लौट गया।

रमज़ान आठ हिजरी में मक्का पर विजय प्राप्त होने वाला युद्ध अभियान हुआ जिसे ग़ज़्वतुल फ़तह अल-आज़म भी कहते हैं। तबरी के इतिहास में बयान है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने लोगों को यात्रा की तय्यारी करने का आदेश दिया। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने घर वालों को अपना सामान तय्यार करने का भी फ़रमाया। हज़रत अबू बकर अपनी बेटी हज़रत आयशा रज़ी. के घर गए तो वह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का सामान तय्यार कर रही थी। सीरत हलबिय्यः नामक पुस्तक में लिखा है कि जब हज़रत अबू बकर रज़ी. इस बारे में हज़रत आयशा रज़ी. से पूछ ताछ फ़रमा रहे थे तो उसी समय रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम भी तशरीफ़ ले आए। हज़रत अबू बकर रज़ी. के पूछने पर आप स. ने फ़रमाया- क़ुरैश से मुक़ाबले का इरादा है। हज़रत अबू बकर रज़ी. ने निवेदन पूर्वक पूछा कि क्या क़ुरैश और हमारे बीच अभी समझौते और सन्धि की अवधि शेष नहीं है? आप स. ने फ़रमाया- हाँ, किन्तु उन्होंने ग़द्दारी की है और सन्धि को तोड़ दिया है, परन्तु इस बात को अभी गुप्त ही रखना।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ीयल्लाहु तआला अन्हु बयान फ़रमाते हैं कि आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के इरशाद पर कई हज़ार आदमियों की सेना तय्यार हो गई और जब आप स. लड़ने के लिए निकले तो फ़रमाया- ऐ मेरे ख़ुदा! मैं तुझसे दुआ करता हूँ कि तू मक्का वालों के कानों को बहरा कर दे और उनके जासूसों को अन्धा कर दे, न वे हमें देखें तथा न ही उनके कानों तक हमारी कोई बात पहुंचे। मदीना में सैंकड़ों मुनाफ़िक़ (पाखंडी) मौजूद थे किन्तु दस हज़ार की सेना निकलती है तथा कोई भनक तक मक्का नहीं पहुंचती, ये अल्लाह तआला के काम थे।

तब़क़ात इब्ने सअद में लिखा है कि मुसलमानों का क़ाफ़िला इशा के समय मक्का से मदीना के रास्ते पर पच्चीस किलो मीटर की दूरी पर मर्आतुज़्ज़हरान में उतरा। सहाबियों ने आप स. के आदेश पर दस हज़ार स्थानों पर आग जलवाई। क़ुरैश को सूचना मिली तो अबू सुफ़यान बिन हरब, हकीम बिन हिज़ाम तथा बदील बिन वर्क़ा को भेजा कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से हमारे लिए शरण ले लेना। उन्होंने सेना को देखा तो बड़े परेशान हो गए। हज़रत अब्बास रज़ी. ने अबू सुफ़यान की आवाज़ सुनी तो पुकार कर कहा कि अबू हंज़ला (यह अबू सुफ़यान का उपनाम है), उसने कहा- लब्बैक (उपस्थित हूँ)। हज़रत अब्बास रज़ी. ने उसे शरण दी तथा उसको दोनों साथियों सहित आँहुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सेवा में पेश किया, तीनों लोगों ने इस्लाम स्वीकार किया।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया कि यह श्रंखला अभी जारी है इन्शाअल्लाह आगे बयान हागा।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا
مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ
وَرَسُوْلُهٗ، عِبَادَ اللّٰهِ رَحِمَكُمُ اللّٰهُ اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآءِ ذِي الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ
يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ يَذْكُرْكُمْ وَادْعُوْهُ يَسْتَجِبْ لَكُمْ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ۔

हिन्दी अनुवाद को अधिक सुन्दर बनाने हेतु सुझाव का स्वागत है, समपर्क करें-9781831652

टोल फ्री सम्पर्क अहमदिया मुस्लिम जमाअत क़ादियान-18001032131